डॉ. अम्बेडकर के जातिवादी दृष्टिकोण की प्रासंगिकता : सामाजिक एवं आर्थिक विकास के सन्दर्भ में

डॉ. मधुसूदन कुमार सिंह

किसी भी व्यक्ति का व्यक्तित्व एवं विचार वर्तमान समय के परिवेश से प्रभावित होता है और वह वर्तमान के आधार पर भविष्य की कल्पना करता है। सामाजिक क्रान्ति के अग्रदूत एवं समाज सुधारक डा0 अम्बेदकर की जातिवादी दृष्टिकोण भी वर्तमान परिवेश से प्रभावित तथा भविष्य की जीवन्त तस्वीर को रेखांकित करता है, जो आज का वर्तमान है। वर्तमान सामाजिक आर्थिक सांस्कृतिक एवं राजनीतिक परिवेश जातिप्रथा के गिरफ्त में है। इस जाति प्रथा ने जात–पात, भेद–भाव, छुआ–छुत, अलगाववाद, नक्सलवाद जैसे गंभीर समस्याओं को जन्म दिया है। जिससे सामाजिक सद्भाव एवं राजनीतिक एकता नष्ट हुई है, सांस्कृतिक तथा आर्थिक विकास अवरूद्ध हुआ है, और निर्धनता तथा बेरोजगारी बढ़ी है और, भाई–भतीजावाद, परिवारवाद, नक्सलवाद तथा आतंकवाद का उत्थान हुआ है। फलतः देश की सम्प्रभूता, अखण्डता तथा एकता खंडित हुई है। संसद पर हमला इसका गवाह है। एक सम्प्रभुतासम्पन्न देश का तात्पर्य होता हैः– बाह्य सुरक्षा और आंतरिक शांति आज आतंकवाद ने राष्ट्र की प्रभुता, अखण्डता तथा सुरक्षा को खतरे में डाल दिया है तो नक्सलवाद ने आंतरिक शांति को भंग किया है। इसलिए डा0 अम्बेदकर के जातिवादी विचार प्रासंगिक प्रतीत हो रहे है क्योंकि वर्तमान परिवेश को दूषित करने में जाति प्रथा का प्रमुख हाथ है और डा0 अम्बेदकर जाति–प्रथा के प्रबल विरोधी थे।